Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

बूंदी जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की संभावना

Jugraj Meena[1]* Dr. Laxmanlal Parmar[2]

[1] Research Student, Govind Guru Tribal University, Banswara, Rajasthan

[2] Research Director, Govind Guru Tribal University, Banswara, Rajasthan

सारांश – *बूंदी विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। बावड़ियों, झीलों एवं धार्मिक स्थलों के कारण इसे छोटी काशी के नाम से जाना जाता है। बूंदी हाड़ौती के पठार में अरावली की गोद में बसा प्राचीन शहर है। बूंदी ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक रूप से समृद्ध है। जिले में वन, वन्यजीव, तालाब, झील, नदियाँ एवं प्राकृतिक स्थल पर्यटन की दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण है। पारिस्थितिकी पर्यटन में प्राकृतिक दृश्यों, जीव-जंतुओं एवं वनस्पति को देखकर आनंद लिया जाता है तथा उसके सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्व को समझा जाता है। वर्तमान में पर्यावरण एवं पर्यटन यहाँ के निवासियों के भोजन एवं रोजगार का साधन बना हुआ है तथा सुनियोजित पारिस्थितिकी पर्यटन से संरक्षित क्षेत्र एवं उसके निकट क्षेत्र के समुदाय को लाभ पहुंचाया जा सकता है तथा पर्यावरण व वन्यजीवों का संरक्षण किया जा सकता है। पारिस्थितिकी पर्यटन में भू-विन्यास, वनस्पति तथा जीवजंतुओं का समान महत्व है तथा इसी से जैव विविधता का संरक्षण किया जा सकता है।*

मुख्य शब्द:- *पारिस्थिति की पर्यटन, अरावली पर्वत, भू-विन्यास, संरक्षित क्षेत्र।*

----------X----------

1. प्रस्तावना

- **पारिस्थितिकी पर्यटनः**

पारिस्थितिकी का अर्थ है जीवों का मूल आवास अर्थात जीवों एवं वनस्पति के मध्य सहसंबंध एवं उन पर पर्यावरण के प्रभाव को पारिस्थितिकी कहा जाता है। पारिस्थितिकी पर्यटन दो घटकों से मिलकर बनता है पर्यावरण एवं मानव पारिस्थितिकी पर्यटन प्रकृति से जुड़ा पर्यटन है जिसमे किसी क्षेत्र की संस्कृति, सभ्यता के साथ विभिन्न वनस्पतियों एवं जीव-जंतुओं के बारे में भी जान पाते हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन में स्थानीय जीव-जंतु, पक्षी, वनस्पति के साथ पर्वत, नदी, झील एवं प्रकृति के दृश्य का आंनद लेते है एवं इन्हें बिना नुकसान पहुंचाए प्रकृति की इस सुरम्य यात्रा का आनंद लेंते है। पारिस्थितिकी पर्यटन प्रकृति एवं मानव के मध्य संतुलन स्थापित कर प्राकृतिक सुंदरता और सामाजिक संस्कृति का संरक्षण करती है। पारिस्थितिकी पर्यटन एक स्वाभाविक रूप से संपन्न क्षेत्र है और इसकी सुंदरता और स्थानीय संस्कृति को बनाए रखने की विविधता को संरक्षित करने के लिए एक जागरूक और जिम्मेदार प्रयास से संबंधित है।

पारिस्थितिकी पर्यटन विशेषताः

- जैव तथा सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण
- जैव विकास के धारणीय विकास पर बल।
- स्थानीय समुदाय को रोजगार एवं जागरूकता।
- यह पर्यावरणीय, सांस्कृतिक एवं सामाजिक लाभ को समुदाय के साथ सांझा करता है तथा पर्यटन प्रबंधन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करता है।
- यह अपेक्षाकृत सस्ता पर्यटन है जिसमें भोग की वस्तुओं का कम उपयोग होता है।
- इसमें प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास कम तथा उनका बेहतर संरक्षण होता है।
- सर्वाधिक तीव्रगति से विकसित पर्यटन है।

2. अध्ययन क्षेत्र

बूंदी जिला राजस्थान के दक्षिण पूर्व में 24°59” से 25°5” उत्तरी अक्षांश तथा 75°19” से 76°19” पूर्वी देशान्तर के

www.ignited.in

मध्य स्थित है। बूंदी का भौगोलिक क्षेत्रफल 5850.50 वर्गकिमी है। यह जयपुर से 215 किमी तथा कोटा से 35 किमी दूर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यहाँ की औसत ऊँचाई समुद्र तल से 268 मीटर, वर्षीय तापमान 26.5°सेंटीग्रेड, औसत वार्षिक वर्षा 72 सेंमी एवं जलवायु ठीक प्रकार की है। रामगढ़ विषधारी अभ्यारण, चंबल घड़ियाल अभ्यारण व जवाहर सागर अभ्यारण का भाग सम्मिलित है। जिले में वर्तमान में 1542.42 वर्ग किलोमीटर वन भूमि है जो कि जिले के भौगोलिक क्षेत्रफल का 26.70% है।

3. शोध के उद्देश्य

1. बूंदी जिले के पर्यटन स्थलों का भौगोलिक विश्लेषण करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन विकास में आ रही समस्याओं को खोजकर समाधान प्रस्तुत करना।
3. बूंदी में पारिस्थितिकी पर्यटन के वर्तमान स्वरूप को समझना।

4. शोध प्रविध

प्रस्तुत शोधपत्र विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस उद्देश्य से आंकड़ो का एकत्रीकरण प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत से किया गया है। मुख्यतः द्वितीयक स्रोत के आंकड़ो की सहायता से अध्ययन संपन्न हुआ। इस हेतु विभिन्न समाचार पत्र, मासिक पत्रिका, जर्नल्स, अन्य शोधपत्र, पुस्तक/ग्रंथ, राज्य एवं केन्द्र सरकार की रिपोर्ट, वेबसाइट की सहायता ली गयी है।

5. बूंदी में पारिस्थितिकी पर्यटन

रामगढ़ विषधारी अभ्यारण- इस अभ्यारण की स्थापना 1982 में की गयी थी। यह जैतपुर, तलवास, 307 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है। विषधारी वन्यजीव अभयारण्य बूंदी से 45 किमी. की दूरी पर अरावली पर्वत श्रृंखला के आड़ावाला पहाड़ी के समानांतर है और बूंदी-नैनवां मार्ग पर स्थित है। यह विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और जीवों का आवास है। यहाँ शुष्क पर्णपाती वन में खैर, सालार, खिरनी, आम, धोक के वृक्ष एवं बाघ, सांभर, तेंदुआ, जंगली सूअर, चिंकारा, स्लॉथ भालू, भारतीय भेड़िया, लकड़बग्घा, सियार, और लोमड़ी इस अभयारण्य में देखे जा सकते है। यह अभ्यारण रणथंभौर और मुकुन्दरा राष्ट्रीय पार्क का बफर जोन है तथा बाघों का जच्चाघर है। हाल ही मे इसको टाइगर रिजर्व बनाए जाने का प्रस्ताव सरकार को भेजा है।

भीमलथ-अभयपुरा आद्रभूमि (वेटलैंड)- यह वेटलैंड बूंदी चित्तौड ंमार्ग पर स्थित है, यहाँ हर वर्ष मानसून देशी विदेशी पक्षी विचरण करते है। यहाँ सर्दियां शुरू होते ही यूरोपियन पिनटेल, कॉमन पोचार्ड, पेलिकन, जकाना सहित बड़ी संख्या में स्थानीय जांघिल, आईबिस, कोमन किंगफिशर, कोमडक, पाइडकिंग फिशर, कोरमोरेंट व स्विट पक्षी आना शुरू कर देते हैं। भीमलत-अभयपुरा क्षेत्र में ईको ट्यूरिज्म के तहत 60 लाख रुपए के विकास कार्य कराए जा रहे हैं। इससे क्षेत्र में वाचटॉवर, रैलिंग, एनीकट एवं रोड निर्माण का कार्य शुरू किया जाएगा। यह कार्य पूर्ण होते ही करीब 3 किलोमीटर लंबे पहाड़ी व सघन वन क्षेत्र में पर्यटक वॉटरफाल, भीमलत जंगल, भीमलत वेली, शैल चित्र व जलप्रपात के साथ वन्यजीवों व पक्षियों के रोमांच का आनंद उठा सकेंगे।

चित्र-1 भीमलथ जलप्रपात

चित्र-2 अभयपुरा आद्रभूमि

कनकसागर तालाब दुगारी- यह तालाब नैनवां के समीप दुगारी गांव में है जिसका भराव क्षेत्र 72 वर्ग किमी है। इस तालाब में इंडियन स्कीमर पेलिकेन, ब्लेक टेल गोड पिट, लिटिल रिंगड फ्लोवर, स्नेड सेक, कॉमन स्वाइप, कॉमन गल पक्षी देखे जाते हैं। तालाब में देशी विदेशी पक्षियों की संख्या के अनुसार वन विभाग ने 19 फरवरी 1985 में तालाब को पक्षी शिकार निषिद्ध क्षेत्र घोषित कर दिया है।

www.ignited.in

बरधा बांध- बरधा बांध राष्ट्रीय राजमार्ग 52 एवं तालेड़ा से 8 किमी दूर स्थित है जिसका (बरधा बांध) निर्माण सन् 1872 में ब्रिटिश गर्वनर रॉबर्टशन ने अल्फानगर इलाके में सिंचाई के लिए करीब 150 साल पहले किया था। इस बांध को "हाड़ौती का गोवा" कहा जाता है जहाँ समीपवर्ती जिलों से हजारों सैलानी नहाने, वोटिंग का लुत्फ लेने आते है।

गुढ़ा बांध - यह मेज नदी पर स्थित मिट्टी से बना जिले का सबसे बड़ा बांध है जो हिंडौली जहाजपुर मार्ग पर स्थित है, यहाँ पर्यटक स्नान, पिकनिक, बोटिंग का लुत्फ उठाने आते है। यहाँ इंडियन स्कीमर (पंछिडा) को देखा जा सकता है।

रामनगर आद्रभूमि- जिले के बूंदी-चित्तौड़ मार्ग स्थित रामनगर आद्रभूमि पर हजारों प्रवासी पक्षी सर्दियां शुरू होते ही आ जाते है। इस तालाब के बीच बने टापुओं पर दिनभर प्रवासी, अंतर प्रवासी व स्थानीय पक्षियों की करीब 50 प्रजातियों को देख सकते है। यहाँ अन्य राज्यों, चीन, मंगोलिया एवं यूरोप से ग्रेलेगगूंज, बारहेडेडगूंज, यूरोपीय पिनटेल, नॉर्दनशोवलर, ग्रेबिटर्न, ग्रेटर फ्लेमिंगो एवं कुरजा (डोमोशयाल क्रेन) को देखा जा सकता है।

जैतसागर झील- जैत सागर, अरावली पर्वतमाला की तलहटी में 4445 हेक्टयर में फैली एक सुंदर झील है जिसे जैत मीणा ने बनवाया था। वोटिंग करते समय इसकी सतह पर खिले हुए कमल के फूल, फंवारे, वाटरगेम, लाइटिंग, पानी में सुंदर मछलियां एवं किनारे पर सुखमहल के कारण इसकी सुंदरता और बढ़ जाती है। जैत सागर विशाल दीवारों से घिरा हुआ है और इसमें चार दरवाजे हैं जो प्रवेश द्वार का काम भी करते हैं।

धुँधलेश्वर महादेव- बारिश में जिले के तलवास गांव के समीप धुंधलेश्वर महादेव के स्थान पर जलप्रपात गिरना शुरू होता है। बरसात से चारों तरफ हरियाली छा जाती है। इसी प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद उठाने के लिए स्थानीय पर्यटक धुंधलेश्वर महादेव पिकनिक स्पॉट पर आते है। अजीतगढ़ किले से गिरता झरना भी आकर्षक का कारण है।

रामेश्वर महादेव- बूंदी शहर से 18 किमी दूर अरावली श्रृंखला में स्थित रामेश्वर महादेव जो पर्यटन के साथ-साथ आस्था का केन्द्र भी है, यहाँ प्राकृतिक शिवलिंग पर 200 फीट ऊँचा जलप्रपात है। प्रकृति की गोद में स्थित धार्मिक पर्यटन स्थल रामेश्वर महादेव पर सावन माह व महाशिवरात्रि का नजारा अद्भूत होता है। दूर-दराज से बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां आते हैं। यहाँ लंगूर, तेंदुआ, नीलगाय, भेड़िये एवं पक्षियों के साथ पहाड़ी, दबाव के मोड़, परतदार चट्टानें तथा भ्रंश घाटीके प्रमाण और चूना निर्मित विभिन्न स्थल (गायकेथन) मनोरंजन के रूप में समाहित है।

राजीव गाँधी बायोस्फीयर रिजर्व- राजस्थान सरकार द्वारा 2012 में प्रस्तावित बायोस्फीयर रिजर्व में धौलपुर, करौली जिले में कैलादेवी, सवाई माधोपुर में रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान, बूंदी जिले के रामगढ़ विषधारी, कोटा जिले के दर्रा, जवाहरसागर, राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य एवं मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान के क्षेत्रों के साथ ही बारां जिले के शेरगढ़ अभयारण्य, चित्तौड़गढ़ जिले के भैंसरोडगढ़ अभयारण्य के क्षेत्रों को कॉरीडोर के माध्यम से जोड़ा जाएगा। बायोस्फीयर रिजर्व का उद्देश्य प्रकृति एवं मानव के बीच एक संतुलित संबंध कायम करना है, जिससे प्रकृति को नुकसान पहुंचाये बिना आम आदमी की जरूरतें भी पूरी हो जाएं।

टाइगरहिल्स – वन विभाग को टाइगर हिल्स पर ईको ट्यूरिज्म की दृष्टि से विकसित करने के लिए बजट स्वीकृत हो गया है। यहां टाइगर हिल्स पर रास्ते बनाने, करीब 2 हजार सजावटी पौधे लगाने व छायादार, फूलदार व फलदार पौधे लगाए जाएंगे। इसके साथ ही कच्ची व पक्की दीवार का निर्माण किया जाएगा। ये क्षेत्र हाल ही में मंदाता बालाजी के कारण सुर्खियों में रहा है।

अध्ययन क्षेत्र की समस्या-

- खराब सड़क एवं सीमित यातायात साधन।
- शिक्षा एवं जागरूकता का अभाव।
- लगातार जैव विविधता में कमी।
- बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक जलस्रोतों पर अतिक्रमण एवं प्रदूषण

www.ignited.in

- मछलीपालन एवं आखेट से पक्षियों के भोजन की कमी।
- राजनीतिक पृथक्करण एवं प्रशासनिक उदासीनता।
- पर्यटन विकास में समुचित बजट का अभाव।

पर्यटन विकास के सुझाव-

- ई-वाणिज्य द्वारा होटल, यातायात, गाइड की सुविधा उपलब्ध करवाना।
- सड़क एवं यातायात सुधार, जिले के लिए दैनिक रेलगाड़ीयों की संख्या बढ़ाई जाए तथा निकट क्षेत्र में हवाईअड्डा स्थापित हो।
- पर्यटन स्थलों का उचित रखरखाव के लिए बजट एवं स्वच्छता को बढ़ावा।
- कुछ पर्यटन स्थलों पर न्यूनतम प्रवेश शुल्क लागू हो जिससे प्रशासन विकास बढ़ा सकें।
- जिला पर्यटन केंद्र में अतिरिक्त कर्मचारी बढ़ाये जाए।
- स्थानीय नागरिकों की जागरूकता, दुभाषियों को प्रक्षिक्षण तथा पर्यटन विकास पर सेमिनार आयोजित हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

बूंदी दैनिक भास्कर अंक 7 फरवरी 2020

बूंदी दैनिक भास्कर अंक 12 अक्टूबर 2019

वानिकी समाचार मासिक, अंक 1, वनविभाग, राजस्थान सरकार, मार्च 2015.

भारद्वाज अर्पण अंशु (2015). "ईको टूरिज्म", राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन.

अनुरागी, राजबहादुर (2017). "चित्रकूट में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्याएँ एवं संभावनाएँ" डॉ. हरिसिंह गोर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश.

राजावत सिंह पृथ्वी, चित्र, मानद वन्यजीव प्रितिपालक, बूंदी, 27 अप्रैल 2020.

Corresponding Author

Jugraj Meena*

Research Student, Govind Guru Tribal University, Banswara, Rajasthan

www.ignited.in